**RAJDHANI COLLEGE**
**University of Delhi, Delhi**

**In collaboration with**
**NATIONAL COUNCIL FOR PROMOTION OF SINDHI LANGUAGE (NCPSL)**
**MHRD, GOVERNMENT OF INDIA**
Organizes
**A Two Day National Seminar**
On the theme

# जनांदोलन और भारतीय साहित्य : हिंदी और सिन्धी के विशेष सन्दर्भ में

On
**8th -9th February, 2018**
At
**Rajdhani College, University Of Delhi, Delhi**

**FULL PAPER SUBMISSION (Last Date 3rd February, 2018)**

मनुष्य का विकास निरंतर परिवर्तनों का इतिहास है. संघर्ष और आन्दोलन इस परिवर्तन के स्थायी कारक हैं, इन्ही के माध्यम से ठहरावों, जड़ताओं को तोड़कर नवीन चेतना का विकास होता है . मुक्ति के नए नए सन्दर्भ तलाशे जाते हैं. वास्तव में किसी भी आन्दोलन के केंद्र में मुक्ति की आकांक्षा ही प्रतिबिंबित होती है. उसकी अभिव्यक्ति के अलग अलग रूप हो सकते हैं,किन्तु उसका मूल स्वतंत्रता और मानवीय विकास ही होता है.भक्ति आन्दोलन इसी रूप में व्यापक जन-समुदाय का सांस्कृतिक आन्दोलन है, कि वह अभिजात्य संस्कृति, जाति-व्यवस्था , धर्म के विद्वेष और झूठे ज्ञान के स्थान पर एक अधिक व्यापक , अधिक उदार , अधिक मानवीय जन-संस्कृति की व्यवस्था की वकालत करता है.साझी विरासत का ऐसा सांस्कृतिक उद्वेग , जिसने समग्र राष्ट्र को उद्वेलित किया, वह अप्रतिम है. 1857 का प्रथम स्वाधीनता संघर्ष इसी विरासत और साझी मानसिकता का एक और दस्तावेज़ है, जिसने अंग्रेजो द्वारा थोपी गयी गुलामी और शोषण के खिलाफ व्यापक राष्ट्रीय संघर्ष के माध्यम से मुक्ति के नये आयाम का उद्घाटन किया . इस जन-आकांक्षा की निर्णायक प्रतिध्वनि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में चले स्वाधीनता आन्दोलन में दिखाई पड़ती है, जिसमें अपनी कमियों से मुक्ति की आकांक्षा स्वाभाविक रूप से राष्ट्र की मुक्ति से जुड़ गयी थी . राजनीतिक रूप से स्वाधीनता तो 1947 में मिल गयी थी लेकिन वास्तविक आज़ादी की तलाश ने स्वाधीन भारत में अनेक नए आंदोलनों की पृष्ठभूमि निर्मित की . ताकत और ताकत के अतिशय केन्द्रीकरण के खिलाफ सम्पूर्ण परिवर्तन की मांग को लेकर जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में नयी आज़ादी की तलाश शुरू हुई, जिसे डॉ. लोहिया के विचारों से धार मिली. नक्सलबाड़ी आन्दोलन की शुरुआत हुई तो डॉ. अम्बेडकर के विचारों और कार्ययोजनाओं से प्रभावित होकर दलित आन्दोलन की शुरुआत हुई. नवउदारवादी व्यवस्था में जल जंगल जमीन पर आये संकट से आदिवासी स्वर ने आन्दोलन का रूप ग्रहण किया तो पितृ-सत्तात्मक व्यवस्था की जकडबंदी से मुक्ति की आकांक्षा ने स्त्रीवादी आन्दोलन की पृष्ठभूमि निर्मित की . इन आंदोलनों ने हाशिये के स्वरों को केंद्र में लाने का कार्य करके भारतीय लोकतंत्र को और गहरा तथा मजबूत बनाने का कार्य किया है, जिसकी मुकम्मल अभिव्यक्ति भारतीय साहित्य में हुई है . जनांदोलनों ने ही भारतीय साहित्य को प्रभावित किया है ऐसा नही है, साहित्य ने भी कई आन्दोलनों की जमीन को तैयार करने का कार्य पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ किया है. भारतीय स्वाधीनता संघर्ष इस तथ्य का जीता जागता प्रमाण है .

भारतीय साहित्य की अवधारणा को एक इकाई के रूप में ही समझा जा सकता है. उसका अस्तित्व समेकित है , जिसमें भारतीयों के जीवन मूल्यों और उनके सपनों , आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति हुई है. इस एकात्मकता की एक स्पष्ट रूपरेखा भारतीय जनांदोलनों और उसकी साहित्यिक अभिव्यक्ति में दिखाई देती है. अन्य भारतीय भाषाओं की तरह हिंदी और सिन्धी भाषा के साहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है . सिन्धी भाषी जिन्हें देश के विभाजन के चलते, अपनी जमीन और संस्कृति से विस्थापित होकर भारत के अनेक भागों में बसना पड़ा, हमेशा दूसरी भाषा के बाहुल्य क्षेत्र में निवास करते हुए उन्होंने वहां के लोगों के बीच अपनी अस्मिता के साथ जो पहचान निर्मित की और सांस्कृतिक समन्वय स्थापित किया है, वह विशिष्ट है. इस विशिष्टता को जानने का साहित्य से बेहतर कोई अन्य माध्यम नही हो सकता हैं . इसी के निमित्त संगोष्ठी का विषय 'जनांदोलन और भारतीय साहित्य : हिंदी और सिन्धी के विशेष सन्दर्भ में ' तय किया गया है. इस संगोष्ठी से जनांदोलनों के सन्दर्भ में दोनों भाषाओं के साहित्य में अभिव्यक्त सामूहिक चेतना के सूत्र तलाशने के साथ जनांदोलनों के स्वरुप को भी समझने में आसानी होगी . विषय से सम्बंधित अंतर्विषयक समझ विकसित करने में मदद मिलेगी , जिससे भाषा और साहित्य दोनों समृद्ध होगा.

**The Sub-themes of the seminar can be followings:**

- जनांदोलन और भारतीय साहित्य
- राष्ट्रीयता और जनांदोलन
- जनांदोलनों का भारतीय साहित्य में योगदान
- 1857 का स्वाधीनता संघर्ष और साहित्य
- नवजागरण और भारतीयता
- स्वाधीनता संघर्ष और भारत की प्रमुख भाषाएँ
- स्वाधीनता संघर्ष की पूर्व-पीठिका के रूप में साहित्य
- आपातकाल और भारतीय साहित्य
- दलित आन्दोलन, स्त्रीवादी आन्दोलन , आदिवासी अस्मिता और भारतीय साहित्य
- फिल्म और जनांदोलन
- हिंदी साहित्य और जनांदोलनों का अंतर्संबंध

सम्बंधित विषय से मिलते-जुलते विषय या उनकी अभिव्यक्ति करने वाले साहित्यकार पर लेख

- Full paper in about 2500 words (minimum) must be submitted to rchindiseminar@gmail.com on or before 3rd February, 2018.
- Only Selected paper will be allowed for presentation.
- Selected papers will be published in the form of book.
- **No Registration Fee.**

**Dr. Satya Prakash Singh**
**Convenor**
M: 9811870076

**Dr. Deo Kumar**
**Teacher In- Charge, Hindi**

**Dr. Rajesh Giri**
**Principal**
24/1/2018